

শিল্পী সাবিনা ইয়াসমিন

তাল কাহারবা

গীতিময় সেই দিন চিরদিন বুঝি আর হলোনা  
মরমে রাজা পার্থী উড়ে সে গেল নাকি  
সে কথা জানা হলো না

দিন যায় কথা জেগে থাকে  
মন তারে কাছে ধরে রাখে  
কখনো বসন্ত কখনো শ্রাবণ  
কেন যে এতো ছলনা

যতো তুমি হও অভিমानी  
ভিতরে দুয়ার খোলা জানি  
চোখেরি ভাষাতে আজকে নাহয়  
মনেরি কথা বল না

|    |      |     |     |   |      |       |          |       |        |     |     |        |    |        |      |      |    |   |
|----|------|-----|-----|---|------|-------|----------|-------|--------|-----|-----|--------|----|--------|------|------|----|---|
| সা | সা   | ধা  | -   | - | -    | -     | -        | -     | ধা     | পা  | ধা  | ধাধিধা | পা | পাধাপা | পামা | মা   | গা |   |
| গী | তি   | ম   | ০   | ০ | ০    | ০     | ০        | ০     | য      | সে  | ই   | দি০০   | ন  | টি০০   | র০   | দি   | ন  |   |
| সা | রে   | রে  | -   |   | গা   | রে    | মা       | গা    | রেগারে | সা  | সা  | -      |    | -      | -    | -    | -  |   |
| বু | ঝি   | আ   | ০   |   | ০    | ০     | ০        | ০     | হ০০    | লো  | না  | ০      |    | ০      | ০    | ০    | ০  |   |
| -  | সা   | সা  | সা  |   | রে   | রে    | রেমা     | মা    | -      | সা  | সা  | সা     |    | রে     | রে   | রেমা | মা |   |
| ০  | ম    | ০   | মে  |   | রা   | জা    | পা০      | খী    | ০      | উ   | ড়ে | সে     |    | গে     | ল    | না০  | কি |   |
| -  | মাধা | ধা  | ধা  |   | ধাপা | পাধা  | পা       | পামা  | পামাপা | -   | -   | ধা     |    | মা     | পা   | সা   | -  | - |
| ০  | সে০  | ক   | থা  |   | জা০  | না০   | হ        | লো০   | না০০   | ০   | ০   | ০      |    | ০      | ০    | ০    | ০  |   |
| ধা | সাঁ  | সাঁ | সাঁ |   | সাঁ  | সাঁরে | সাঁরেসাঁ | সাঁধি | সাঁ    | রেঁ | রেঁ | -      |    | -      | -    | -    | -  |   |
| দি | ন    | যা  | য   |   | ক    | থা০   | জে০০     | গে০   | থা     | ০   | কে  | ০      |    | ০      | ০    | ০    | ০  |   |

